प्रदर्शनी

श्री राम जन्म भूमि अयोध्या

आदि से वर्तमान तक – सत्य एवं तथ्य

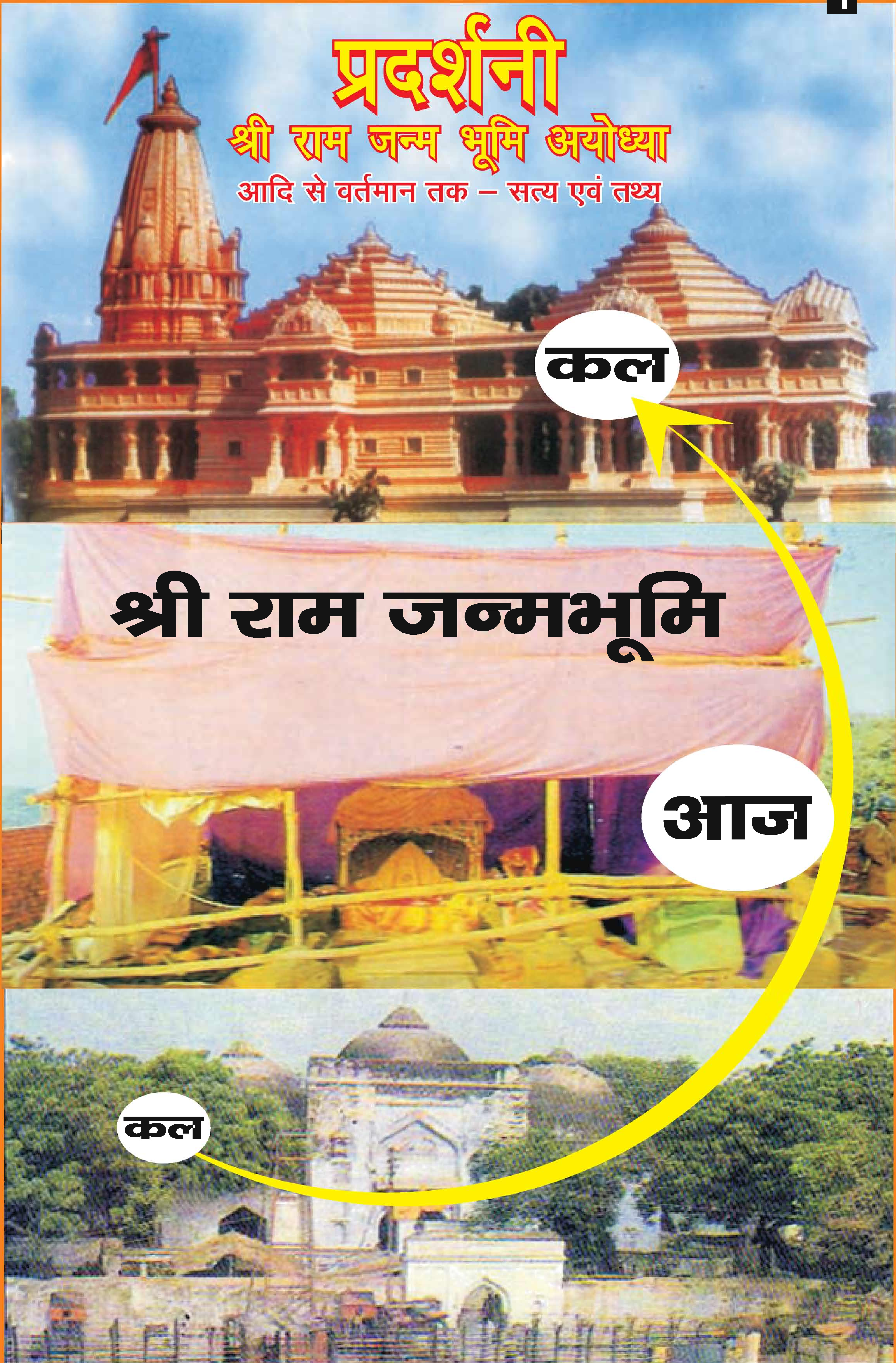

प्राक्कथन

प्रदर्शनी अयोध्या **''आदि से वर्तमान तक - सत्य एवं तथ्य''** भगवान् श्रीराम की जन्मभूमि अयोध्या के आदिकाल से लेकर अब तक के उपलब्ध वैदिक, पौराणिक, और अन्य हिन्दू वाङ्गमय, मुगलकालीन दस्तावेजी साक्ष्य एवं अंग्रेजी शासन के विभिन्न गजेटियरों के साथ समय-समय पर भारत सरकार द्वारा कराए गए उत्खनन से प्राप्त पुरातात्विक अवशेषों के आधार पर संयोजित की गई है।

यह एक स्थापित ऐतिहासिक सत्य है कि मुगल आक्रान्ताओं ने बार-बार हिन्दुओं का दमन एवं उस पर इस्लाम की श्रेष्ठता सिद्ध करने का प्रयत्न किया। उन्होंने हजारों मन्दिर तोड़े, जिनमें से 4 पवित्र स्थान क्रमशः अयोध्या व मथुरा में भगवान श्रीराम एवं श्रीकृष्ण का जन्मस्थान व काशी एवं सोमनाथ में स्थित भगवान शिव के ज्योतिर्लिंग थे। मुगल आक्रान्ताओं ने इन सभी स्थानों पर मस्जिद जैसा ढांचा बनाने का प्रयत्न किया। जिनमें से भगवान सोमनाथ के मन्दिर की पुनर्प्रतिष्ठा का कार्य आजादी के बाद पंडित जवाहरलाल नेहरू के प्रधानमंत्रित्व काल में केन्द्रीय मंत्री मण्डल के निर्णय पर किया गया। जिसकी पहल भारत के प्रथम उप प्रधानमंत्री एवं गृहमंत्री लौहपुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल एवं उस समय के मंत्री मण्डल के मंत्रियों डॉ0 के. एम. मुंशी एवं काका साहब गाडगिल ने की।

इस प्रदर्शनी के द्वारा भगवान् श्रीराम के जन्मस्थान से संबंधित तथ्यों को भली प्रकार जाना और समझा जा सकता है। प्रदर्शनी में जन्मस्थान के संबंध में अब तक चली न्यायिक प्रक्रिया को भी दर्शाने का प्रयास किया गया है। प्रदर्शनी में इस सम्बन्ध में मुस्लिम पक्ष के साथ हुई वार्ताओं का निष्कर्ष भी दिया गया है। इस सम्पूर्ण प्रदर्शनी का कोई भी प्रदर्श कपोल-कल्पित या भावनाओं के आधार पर नहीं है। सम्पूर्ण साक्ष्यों को ज्यों का त्यों प्रस्तुत किया गया है। जिसके आधार पर यह कहा जा सकता है कि श्रीराम जन्मभूमि पर भव्य मंदिर निर्माण के लिए संसद में कानून बनाना ही एक मात्र सही विकल्प है।

PREFACE

The exhibition "**AYODHYA AADI SE VARTAMAN TAK - SATYA EVAM TATHYA**" covers the story of Ayodhya and that of Sri Rama Janma Bhumi from the beginning through the historic period till date. It is organized based on the available evidences sourced from the Vedic, Puranic and other Hindu literature, documentary evidences from the Mughal period, Gazetteers from the British period and archaeological remains found from excavations conducted by the Government of India from time to time.

It is a fact of history that the Mughal invaders attempted to humiliate Hindus and tried to superimpose Islam on them. They demolished thousands of Hindu Temples including the four at important sacred places, viz., Somnath, Ayodhya, Mathura and Kashi – and tried to build Mosque-like structures on most of them. Out of the said four sacred temples, Somnath temple was restored to its pristine glory immediately after independence through a Cabinet decision taken by the Government of Bharat under the Prime Ministership of Pt. Jawahar Lal Nehru which was initiated by Sardar Vallabh Bhai Patel (Iron Man of Bharat) - the then Deputy Prime Minister and Home Minister of Bharat, Dr. K.M. Munshi, Kaka Saheb Gadgil and others.

This exhibition helps the uninitiated in understanding and appreciating the issues involved concerning Sri Rama Janma Bhumi. The exhibition also tries to present the chronology of the legal processes and tangles involved in the case till date. The exhibition also contains the summary of dialogues that was held with the Muslim claimants with the aim to resolve the issue. The exhibition faithfully presents true facts and figures and no part of it entertains fertile imagination or emotional portrayal. All evidence is displayed here as it is. All these point to the pragmatic reality that a law passed by the Parliament of India to address the issue of construction of Sri Rama Janma Bhumi temple will be the best solution to the issue.

प्रदर्शनी – श्री राम जन्म भूमि अयोध्या

(आदि से वर्तमान तक)

।। अयोध्या मंगलाचरण ।।

अष्टाचक्रा नवद्वारा देवानां पूरयोध्या ।
तस्याँ् हिरण्ययः कोशः स्वर्गो ज्योतिषावृतः ।।
तस्मिन् हिरण्यये कोशे त्र्यऽरे त्रिप्रतिष्ठिते ।
तस्मिन् यद् यक्षमात्मन्वत् तद् वै ब्रविदों विदुः ।।
प्रभाजमानां हरिणीं यशसा संपरीवृताम् ।
पुरँ् हिरण्ययीं ब्रा विवेशापराजिताम् ।।
-(अथर्ववेद, १०.२.३१-३३)

उत्तिष्ठत् मा स्वप्त ।अग्निमिच्छध्वं भारताः ।राज्ञस्सोमस्य तृप्तासः ।
सूर्येण सयुजोषसः ।युवा सुवासाः ।अष्टाचक्रा नवद्वारा ।देवानामं
पूरयोध्या ।तस्याँ् हिरण्मयः कोशः ।स्वर्गो लोको ज्योतिषाऽऽवृतः ।
यो वै तां ब्रणो वेद ।अमृतेनावृतां पुरीम् ।तस्मै ब्र च ब्रा च ।
आयुः कीर्तिं प्रजां ददुः ।विभ्राजमानाँ् हरिणीम् ।यशसा संपरीवृताम् ।
पुरँ् हिरण्मयीं ब्रा ।विवेशापराजिता ।
-तैत्तिरीयारण्यक, १.२७.११४-११५

तद्विष्णोः परमं धाम यान्ति ब्रसुखप्रदम् ।
नानाजनपदाकीर्णं वैकुण्ठं तद्धरेः पदम् ।।
प्राकारैश्च विमानैश्च सौधे रत्नमयैर्वृतम् ।
तन्मध्ये नगरी दिव्या सायोध्येति प्रकीर्तिता ।।
-पद्मपुराण, उत्तरखण्ड, २२८.१०-११

अयोध्यायै नमस्तेस्तु राममूर्त्यै नमो नमः ।
आद्यायै तु नमस्तुभ्यं सत्यायै तु नमो नमः ।।
शरय्वावेष्टितायै च नमो मातस्तु भो सदा ।
ब्रादिवंदिते मातर ऋषिभिः पर्युपासिते ।।
रामभक्तिप्रिये देवि सर्वदा ते नमो नमः ।
ये ध्यायन्ति महात्मानो मानसा त्वां हि पूजिते ।
तेषां नश्यन्ति पापानि जन्मोपार्जितानि च ।।
-सत्योपाख्यान, पूर्वार्द्ध ३५.२९-३२

शुक्लाम्बरधरा देवी दिव्यचन्दनभूषिता ।
दिव्यमालां च सा कण्ठे विभ्रती वै मनोहराः ।।
शंखचक्रधरादेवी चक्रारूढा शुभानना ।
मूर्तिमद्भिश्च तीर्थैश्च परितः सेविता च सा ।।
चामरैर्वीज्यमाना सा सखीभिः परिवारिता ।
रामप्रिया पुरी चाद्या विबुधैः सेविता च सा ।।
वसिष्ठवामदेवाद्यैर्मुनिवृन्दैरुपासिता ।
इदृशी विमला दृष्टा पुरी चाद्या महामते ।।
-सत्योपाख्यान, पूर्वार्द्ध ३४.२-५

अयोध्या न परं नाम्ना गुणेनाप्यरिभिः सुराः ।
साकेतरूढिरप्यस्याः श्लाघ्यैव स्वैर्निकेतनैः ।।
स्वर्निकेतमिवाातुं साकूतैः केतुबाहुभिः ।
सुकोशलेति च ख्यातिं सा देशाभिख्यया गता ।।
विनीतजनताकीर्णा विनीतेति च सा मता ।
-आदिपुराण, १२.७६-७८

अष्टाचक्रा अयोध्या : एक सांस्कृतिक धरोहर

अथर्ववेद के काल में 'अष्टाचक्रा अयोध्या' की अवधारणा के माध्यम से जहां एक ओर अयोध्या के वास्तुशास्त्रीय स्थापत्य की परिभाषा प्रस्तुत की गई तो वहीं दूसरी ओर अर्थर्ववेद के ही एक- दूसरे मंत्र 'अष्टाचक्र' वर्तते एकनेमि' के द्वारा आठ अरों वाले पहिए की प्रतीक योजना से अयोध्या के सूर्यवंशी राजाओं की केन्द्रीकृत चक्रवर्ती राज्य की अवधारणा को मूर्त्त रूप देने की कोशिश की गई। चक्र, धुरा, उसके आठ अरे और मण्डलाकार पहिया ये सब वैदिककालीन 'राष्ट्र' राज्य के महत्त्वपूर्ण प्रतीक चिन्ह थे। सूर्यचक्र से अनुप्राणित आठ अरों वाले चक्र की अवधारणा भारतीय कला, मूर्तिकला तथा वास्तुकला के क्षेत्र में भी विशेष लोकप्रिय हुई है। उड़ीसा स्थित कोणार्क के सूर्य मंदिर में स्थापित आठ अरों वाला चक्राकार पहिया 'अष्टाचक्रा अयोध्या' से अनुप्रेरित अयोध्यावंशी आर्यो की राजनैतिक और सांस्कृतिक धरोहर को प्रस्तुत करने वाला एक राष्ट्रीय प्रतीकचिन्ह है। भारतीय परम्परा में वैदिक, जैन तथा बौद्ध धर्मावलंबी चक्राकार चिन्ह के प्रतीक को इसलिए महत्व देते रहे क्योंकि चिर अतीत में इन तीनों परम्पराओं के मूल पुरुष अयोध्या के सूर्यवंशी राजा इक्ष्वाकु थे तथा 'अष्टाचक्रा अयोध्या' को चक्रवर्ती अवधारणा के साथ इनकी ऐतिहासिक अस्मिता के सूत्र जुड़े हुए थे।

अयोध्या की स्थापना एवं ग्रंथों में वर्णन

पुराणों एवं वाल्मीकि रामायण के प्रमाण कि धरती के प्रथम राजा वैवस्वत मनु हुए।

वैवस्वतो मनुर्नाम माननीयो मनीषिणाम्।

आसीन्महीभृतामाद्यः प्रणवश्चछन्दसामिव।।

वैवस्वत मनु के पुत्र इक्ष्वाकु से ही सूर्यवंश चला और पुत्री इला से चन्द्रवंश अपने पुत्र के लिए उन्होंने श्री अयोध्यापुरी का निर्माण किया। इस प्रकार अयोध्या भूमण्डल की प्रथम राजधानी स्वयं महाराज मनु द्वारा बनाई एवं बसाई थी। इसका आयताकार विस्तार 12 योजन (48 कोस) लम्बा एवं 3 योजन (12 कोस) चौड़ा था। इसका वर्णन वाल्मीकि रामायण के पंचम सर्ग में विस्तार से मिलता है। लिखा है कि कौशल नाम का एक महान् जनपद है जो सरयू के किनारे बसा है। धन-धान्य से सम्पन्न, सुखी और समृद्धशाली है।

कोशलो नाम मुदितः स्फीतो जनपदो महान।

निविष्टः सरयूतीरे प्रभूतधनधान्यवान।।5।। वा.रा./बा.का./पंचग सर्ग

अयोध्या नाम तत्रस्ति नगरी लोकविश्रुत।

मनुना मानवेन्द्रेण पुरैव निर्मिता स्वयं।। 6।। वा.रा./बा.का./पंचग सर्ग

आयता दश च द्वे च योजनानि महापुरी।

श्रीमती त्रीणि विस्तीर्णा नानासंस्थानशोभिता।7। वा.रा./बा.का./पंचग सर्ग

उन्होंने आगे अयोध्या राजप्रासाद अथवा दुर्ग के संबंध में लिखा है-

दुर्गगम्भीरपरिखां दुर्गमन्यैर्दुरासदाम।

वाजिवराणसम्पूर्णाः गौभिरुष्ट्रैः खरैस्तथा।। 13।। वा.रा./बा.का./पंचग सर्ग

सा योजने द्वे च भूयः सत्य नामा प्रकाशते।

यस्यां दशरथो राजा वसजगदपालयत।। 26।। वा.रा./बा.का./षष्ठ सर्ग

हिन्दू वाङ्गमय में अयोध्या

सप्तपुरियों में प्रथम

अयोध्या मथुरा माया काशी कांची अवंतिका ।
पुरी द्वारावती चैव सप्तैताम् मोक्षदायिका ।।
अयोध्यायै नमस्तेस्तु राममूर्त्यै नमो नमः ।
आघायै च नमस्तुभ्यः सत्यायै ते नमो नमः ।
पापैर्नयोध्यतेयस्मा त्तेनायोऽध्येति कथ्यते ।। 1 ।।

स्कंदपुराणांतर्गत अयोध्यामाहात्म्य (संस्कृत)

जो त्रिकाल बाधित आद्य है, ऐसी रामस्वरूप अयोध्यानगरी को हमारा बारंबार नमस्कार है। कारण, इस नगरी में किसी प्रकार पापरूपी शत्रु कभी युद्ध अर्थात स्पर्श भी नहीं करता, इसी कारण इस नगरी को आदिपुरी अयोध्या कहते हैं।

यावत् पदानि रामस्य मार्गे गच्छति मानुषः ।
पदेपदेऽश्वमेधस्य यज्ञस्य लभते फलम् ।। 1 ।।

श्रीरामचन्द्र जी के मार्ग में मनुष्य यात्रार्थ जितना चले उतना ही प्रत्येक पग पर अश्वमेध यज्ञ का फल उसको प्राप्त होता है। इसलिए इस बस्ती में आने का लाभ जीवमात्र को है।

विष्णोःपादमवंतिका गुणवतीं मध्ये च कांचीपुरी ।
नाभौद्वारवतीं पठंति हृदये मायापुरी योगिनाः ।।
ग्रीवमूलमुदाहरंतिमथुरां नासाग्रवाराणसीं ।
एतद् ब्रपदं वदंति मुनयोर्योध्यापुरी मस्तकम् ।। 1 ।।

श्री अवंतिकापुरी भगवानविष्णु के चरण कमल, शिवकांची और विष्णुकांची यह दोनों उनकी जंघा, द्वारकापुरी नाभिस्थान, मायापुरी (हरिद्वार) हृदयस्थान, मथुरापुरी कंठस्थान और काशीपुरी नासिका स्थान है। इतने ब्रह्मपदों का वर्णन करते हुए मुनियों ने परब्रह्मस्वरूप इस अयोध्यापुरी को विष्णु भगवान के मस्तक की उपमा दे दी है। इसलिए श्री अयोध्या जी की महिमा का जितना वर्णन किया जाए उतना ही थोड़ा है। अब इस नगरी में सर्वप्रमुख श्री सरयू महानदी है।

।। अयोध्या महात्म्य।।

श्री सरयू वर्णन

विष्णुनेत्रसमुद्भूता ब्रमानससंस्थिता। वसिष्ठेन समानीता वासिष्ठी परिकीर्तिता।।1।।
तत्सराच्च समायाता सरयू तेन कथ्यते। रामार्थ च समायाता रामगंगेति कथ्यते।।2।।
जन्मप्रभृति यत्पापं स्त्रियो व पुरूषस्य वा। सरयूस्नानमात्रेण सर्वमेय प्रणश्यति।।3।।

प्रथमसृष्टि उत्पत्ति के समय भगवान श्री महाविष्णु के नाभिकाल से ब्रह्मा जी की उत्पत्ति हुई। उस समय ब्रह्माजी ने साठ हजार वर्ष तपस्या की तब विष्णुभगवान प्रसन्न होकर सृष्टि रचने की आज्ञा देते समय ब्रह्मा से सप्रेम मिले। ऐसे समय श्री विष्णुभगवान के नेत्रों से जो प्रेमाश्रु गिरे उन्हीं प्रेमाश्रुओं को श्री ब्रह्माजी ने अपने मन से मानसरोवर उत्पन्न करके वह जल शिवजी के सामने हिमालय से बड़ी आस्तिकता से रखा। इसी से उसे नेत्रजाया ब्रह्मामानस तीर्थ कहते हैं और फिर उसी सरोवर से उद्भुत होने के कारण उसका सरयू नाम पड़ा। श्री वसिष्ठ महामुनि जी यही नदी अपने तपोबल से, ब्रह्मा जी की आज्ञा से रामकायार्थ श्री अयोध्यापुरी में लाए। इसलिए इसके श्रीसरयू, वासिष्ठी, रामगंगा, नेत्रजा आदि अनेक नाम पड़े। स्त्रियों के अथवा पुरूषों के जन्मादारभ्य सब पाप श्री सरयू महानदी के स्नान मात्र ही से नष्ट हो जाते हैं। श्री शंकर जी पार्वती से कहते हैं -

जलरूपेण ब्रैव सरयू मोक्षदा सदा। नैवात्र कर्मर्णा भोगो रामरूपो भवन्नेरः ।। 1।।
पशुपक्षिमृगाश्चैव ये चान्य पापयोनयः। तेऽपि मुक्ता दिवं यांति श्रीरामवचनं मम ।। 2।।

इस अयोध्या में जलरूप ब्रह्मा श्री सरयूनदी सदा सर्वदा मोक्ष को देने वाली है। यहाँ पर कर्मों का भोग नहीं भोगना पड़ता। पशु-पक्षी, मृगादिक स्नान मात्र ही से रामरूप होकर मुक्त हो जाते हैं।

।। स्वर्गद्वार तीर्थ।।

प्रथमं तत्र तीर्थं तु कथयामि वरानने । स्वर्गद्वारं समुत्पन्नं प्रथमं सरयूतटे ।। 1।।
मुक्तिद्वारमिदं ज्ञेयं स्वर्गप्राप्तिकरं नृणाम् । सहस्त्रधारामारभ्य पूर्वतः सरयूजले ।। 2।।
षट्त्रिंशदधिकं प्रोक्तं धनुषा षट् शतानिच । स्वर्गद्वारसम तीर्थ न भूतं न भविष्यति ।। 3।।
तस्मादत्र विधानेन तीर्थयात्रां समाचरेत् । स्वर्गद्वारे नरःस्नात्वा पुनर्जन्म न विघते ।। 4।।
हरिश्चन्द्रो हि राजर्षिः सत्यधर्मपरायणः । तेन राज्ञायोध्यायां स्वर्ग नीता वरानने ।। 5।।
स्वर्गद्वार मितिख्यातं लोके वेदे तथैव च । अनेनैव यथा स्वर्गं स्वर्गद्वारं ततो विदुः ।। 6।।

सहस्त्रधारातीर्थ से छः सौ छत्तीस धन्वापूर्व श्री सरयूजल में यह स्वर्गद्वार तीर्थ है। यह तीर्थ प्रथम श्री में प्रकट हुआ। इस तीर्थ के समान कोई तीर्थ न हुआ है न होगा। इस तीर्थ में स्नाने करने से मनुष्यों का पुनर्जन्म नहीं होता। ऐसा मुक्तिदायक यह एक ही मुख्य तीर्थ है। यहीं से श्रीरामचन्द्र जी और राजा हरिश्चन्द्र श्री अयोध्यापुरी का उद्धार कर मनुष्यों को दिव्यदेही बनाकर अपने साथ स्वर्गधाम को ले गए। इसी से इस तीर्थ का नाम स्वर्गद्वार है। चन्द्रमा ने भी इस जगह तीर्थयात्रा करके अपनी मनोकामनापूर्ण की थी, वैसे ही भावयुक्त होकर यात्रियों को विधियुक्त यात्रा करनी चाहिए।

चैत्रशुक्ल नवम्यां तु, स्वर्गद्वारे रघुत्तमम् । ये पश्यन्ति नरांस्तेषां पुनर्जन्म न विद्यते ।।

चैत्र शुक्ल नवमी के दिन जो मनुष्य स्वर्गद्वार में श्रीरामचन्द्र जी
का दर्शन करते हैं उनका पुनर्जन्म नहीं होता है।

।। अयोध्या महात्म्य।।

।। अयोध्या परिक्रमा ।।

सरयूतीरमागत्य साष्टांग प्रणिपातयेत्। आदौ उपायनं दद्यात् ततः संकल्पमाचरेत्।।1।।
वपनं च ततः कृत्वा पश्चात् स्नानं समाचरेत्। मानसं कायिकं पापं प्रायश्चित्तं ततो वदेत।।2।।
स्वसूत्रोक्त विधानेन देवान् पितृश्रव तर्पयेत्। स्नानांते अर्चनं कुर्यात ततः संध्या समाचरेत।।3।।
पितृयज्ञं ततः कुर्यात् तीर्थदेवं च पूज्येत्। द्विजेभ्यो भोजनं दद्यात् आशीर्वचन हेतवे।।4।।
अनेन विधिना नैव मर्यादातीर्थ मुच्यते। श्रद्धायुक्तो नरः कुर्यात् स तीर्थफलमश्नुते।।5।।

प्रथम श्री सरयूनदी को साष्टांग नमस्कार करना चाहिए। तदनन्तर फल, पुष्प, दक्षिणा, पंचरत्न आदि को दोनों हाथों से भेंट रूप में तीर्थ को अर्पण करना चाहिए, पश्चात आचमनादि कार्य कर देश-काल-वर्तमान के अनुसार संकल्प करना चाहिए।

।। श्रीचन्द्रहरि मंदिर।।

अयोध्या सप्तहरयः वर्तते पुण्यराशयः ।
गुप्तहरि चक्रहरि स्तथा विष्णुहरिः प्रिये ।। 1।।
धर्महरि बिल्वहरि स्तथा पुण्यहरि शुभः ।
तस्मांश्चंद्रहरेः पूजा कर्तव्या च विचक्षणैः ।। 2।।
जेष्ठेमासि सितेपक्षे पंचदश्यां: विशेषताः ।
तस्य सांवत्सरी यात्रा दिव्यैश्चंद्रहरे स्मृताः ।। 3।।

श्री अयोध्या यात्रातंर्गत सप्तहरि भी है। उनके नाम गुप्तहरि, चक्रहरि, विष्णुहरि, धर्महरि, बिल्वहरि, पुण्यहरि तथा चन्द्रहरि है। स्वर्गद्वार पर चन्द्रहरि जी का दर्शन पूजन यात्रियों को अवश्य करना चाहिए। इसके पास ही श्रीनागेश्वरनाथ महादेव का मन्दिर है।

।। अयोध्या महात्म्य।।

।। श्रीनागेश्वर नाथ मन्दिर।।

स्वर्गद्वारे नरः स्नात्वा दृष्ट्वा नागेश्वरं शिवम् ।
पूजयित्वा च विधिवत सर्वान् कामानवाप्नुयात् ।। 1।।

यात्रियों को प्रथम स्वर्गद्वार तीर्थ में स्नान कर, श्री नागेश्वरनाथ महादेव जी का दर्शन कर, यथाविधि उनका पूजन करना चाहिए। इससे सकल मनोरथों की सिद्धि प्राप्त होती है।

।। रत्नसिंहासन।।

अयोध्यानगरे रम्ये रत्नमंडपमध्यगम् । ध्यायेत्कल्पतरोर्मूले रत्नसिंहासन शुभमं ।। 1।।
तस्योपरि समासीनेजानकीसहितं हरिम् । वीरासने समासीनं धनुर्बाणधर प्रभुम् ।। 2।।
एवं ध्यात्वा नरो धीमान सीतारामं प्रपूजयेत । प्रणम्य दण्डवद्भूमौ सर्वान् कामानवाप्नुयात् ।। 3।।

श्री अयोध्यापुरी में परम रम्य रत्नों के मंडप के बीच कल्पवृक्ष की छाया में शोभायमान रत्नसिंहासन पर श्रीजानकी महारानी जी के सहित भगवान श्रीरामचन्द्र वीरासन से विराजमान हैं और उनके पार्श्व भाग में श्री लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न आदि छत्र चामर, व्यंजन (पंखा) हाथ में लिए खड़े हैं।

।। अयोध्या महात्म्य।।

।। श्री हनुमानगढ़ी मन्दिर ।।

तमेवमुक्त्वा काकुत्स्थो हनूमन्तमथाब्रवीत् ।
जीविते कृतबुद्धिस्त्वं मा प्रतिज्ञां वृथा कृथाः ।। 32 ।। वा.रा./उ./108 सर्ग

विभीषण से ऐसा कहकर श्रीरामचन्द्र जी हनुमान जी से बोले- 'तुमने दीर्घकाल तक जीवित रहने का निश्चय किया है। अपनी इस प्रतिज्ञा को व्यर्थ न करो।

हनुमंते कृत कार्ये देवैरपि सुदुष्टकरम् । उपकारं न पश्यामि तव प्रत्युपकारिणः ।। 1 ।।

प्रिय मारूते ! देवताओं को भी करने में दुःसाध्य ऐसे कामों को करते हुए तुम हमारी सेवा में तत्पर रहो, ऐसे उपकारी का प्रत्युपकार ही क्यों करें ? इसलिए अब तुम -

अचलं हि अयोध्यायां राज्यं कुरू समाश्रितः । अत्रस्थितानां सिद्धानां सिद्धिदो भव सर्वदा ।। 1 ।।
यावत् चंद्रश्च सूर्यश्च यावत्तिष्ठति मेदिनी । यावन्मम कथा लोके तावद्राज्मं करोत्यसौ ।। 2 ।।

जब तक चन्द्र, सूर्य और पृथ्वी हैं तथा जब तक हमारे भजन कथा का जनता में प्रेम है तब तक यहाँ बैठकर अयोध्याजी का अचल राज्य कीजिए और यहाँ के रहने वाले सिद्धों को सिद्धि का मार्ग दिखाइए। यह कहकर श्रीरामचन्द्र जी ने श्रीहनुमान जी को गद्दी पर बैठाया। तभी से हनुमानजी अयोध्या में बैठे हैं।

मत्कथाः प्रचरिष्यन्ति यावल्लोके हरीश्वर ।
तावद् रमस्व सुप्रीतो मद्वाक्यमनुपालनम् ।। 33 ।। वा.रा./उ./108 सर्ग

'हरीश्वर ! जब तक संसार में मेरी कथाओं का प्रचार रहे, तब तक तुम भी मेरी आज्ञा का पालन करते हुए प्रसन्नतापूर्वक विचरते रहो'।

एवमुक्तस्तु हनुमान राघवेण महात्मना।
वाक्यं विज्ञापयामास परं हर्षमवाप च ।।34।। वा.रा./उ./108 सर्ग

महात्मा श्री रघुनाथ जी के ऐसा कहने पर हनुमान जी को बड़ा हर्ष हुआ।

।। अयोध्या महात्म्य ।।

।। सीताकूप तीर्थ ।।

जन्मस्थानाच्च भो देवि अग्निकोणं विराजते। सीताकूपइति मिख्यातं ज्ञानकूपमितिश्रुतम ।। 1।।
जलपान कृतं येन तस्य कूपस्य पार्वती । स ज्ञानवान भवेल्लोको विवुधानां गुरूर्यथा ।। 2।।

श्रीशंकर जी पार्वती से कहते हैं कि जन्मस्थान के अग्निकोण में सीताकूप नाम का कुआँ है जिसका जल पान नित्य प्रति करने से मनुष्यों की बुद्धि वृहस्पति के तुल्य होकर उसको अवश्य ही ब्रह्मविद्या का ज्ञान होता है।

।। कनकभवन ।।

तस्मादुत्तरदिगभागे स्थले चैव मनोहरम् । सीताया भवनं दिव्यं नाम्ना कनकमंडपम् ।। 1।।
पितृदत्तं तु यत्स्थानं कन्यावैवाहिकोत्सवे । यत्र वै जानकीदेवी सखीभिः परिवारिता ।। 2।।
तत्र गत्वा नरो धीमान पूजां चैव तु कारयेत् । पूजनैव सर्वत्र सर्वान्कामानवाप्नुयात् ।। 3।।

श्री महाराज जनक जी ने कन्यादान के समय में श्रीजानकी जी को सोने का महल भेंट किया था, यही वह स्थान है। यहाँ पर दर्शन पूजन करने से सकल कामनाएं सिद्ध होती हैं।

।। मत्तगजेन्द्र ।।

तस्मात्पूर्वदिशाभागे वीरस्य शुभशंसिनः । स्नान मत्तगजेन्द्रस्य वर्तेते नियतात्मनः ।। 1।।
कोशलारक्षणे दक्षो, दुष्टताडनतत्परः । यस्य दर्शन नृणां विघ्नलेशो न जायते ।। 2।।

श्री मत्तगजेन्द्र जी अयोध्यावासी सज्जनों का रक्षण करते हैं और दुष्टजनों की ताड़ना करते हैं। इनके दर्शनमात्र से ही सब विघ्न दूर हो जाते हैं।

।। अयोध्या महात्म्य।।

।। सप्तसागर तीर्थ ।।

अयोध्या मध्यभागे तु रम्यं पातकनाशकम् । सप्तसागरविख्यातं सर्वकामार्थसिद्धिदम् ।। 1।।
यत्र स्नानेन मानुजः सर्वान्कामानवाप्नुयात् । पौर्णिमास्यां समुद्रस्य स्नानघत्पुण्यमाप्नुयात् ।। 2।।
तत्पुण्यं पर्वणि स्नाते नरश्वाक्षमाप्नुयात् । तस्यादत्र विधानेन स्नातव्यं पुत्रकांक्षया ।। 3।।
आश्विने पौर्णिमास्यां तु विशेषात स्नानमाचरेत् । एवं कुर्वन्नरोघीमान् पुत्रपौत्राभिवृद्धये ।। 4।।

श्रीअयोध्यानगरी के मध्यभाग में रमणीय सप्तसागर नाम का कुण्ड है, जो सब इच्छित फलों को देने वाला है। हर एक पूर्णिमा को समुद्रस्नान करने से जो पुण्यफल प्राप्त होता है, वही फल इस कुण्ड में किसी भी दिन स्नान करने से होता है।

।। देवकाली ।।

सूर्यकुण्डात्पश्चिमे तु दुर्गाकुण्डमनुत्तमम् । आद्या चाष्टभुजौ तत्र सर्ववांछितदायिनी ।। 1।।
सूर्यकुण्ड के पश्चिम दिशा में दुर्गाकुण्ड आदि शक्ति देवकाली का स्थान है।
यहाँ पर दर्शन पूजन करने से सब वांछित फल प्राप्त होते हैं।

।। सूर्यकुण्ड ।।

घोषार्ककुन्डमपरं वैतरिण्यास्तु दक्षिणे । सूर्यकुण्डमितिख्यातं सर्वकामार्थसिद्धिदम् ।। 1।।
वणी कुष्ठी दरिद्रो वा दुःखाकांतोहि यो नरः । करोति विधिवत स्नानं सर्वरोगैः प्रमुच्यते ।। 2।।
भाद्र, पोषे तथा माघे शुक्लपक्ष्यां प्रयत्नतः । रविवारं विशेषेण कर्तव्यं स्नानमोदकात् ।। 3।।

वैतरणी के दक्षिण दिशा में सूर्यकुण्ड नाम का तीर्थ है। यहाँ पर स्नान करने से फोड़ा, फुन्सी तथा कुष्ठी, दरिद्रों, महादुखी सब रोगों से मुक्त होता है।

।। अयोध्या महात्म्य।।

।। सहस्त्राधारा व श्रीलक्ष्मण मन्दिर ।।

पापमोचनतीर्थातु पर्वतश्शरयूजले । सहस्त्रधारातीर्थे वै सर्वकिल्मिषनाशनम् ।। 1।।
यस्मिन रामाज्ञया वीरो लक्ष्मणः परवीरहा । प्राणानुत्सृज्य योगेन यायौ शेषात्मतां पुरा ।। 2।।
अत्र स्नानेन दानेन श्रद्धया परयान्वितः । सर्वपापविशुद्धात्मा विष्णुलोकं ब्रजेत्पुमान ।। 3।।
अत्र स्नाने नरो धीरो लक्ष्मणं शेषरूपिणम् । तीर्थे संपूज्य विधिवत विष्णुलोकं ब्रजेन्नरः ।। 4।।

पापमोचन तीर्थ से पूर्व दिशा में करीब ही श्री सरयूजल में सहस्त्रधारा तीर्थ है। यहाँ शेष के सहस्त्रफणों से अमृतस्रावी सहस्त्रधाराएं निकलती हैं। इसलिए इस स्थान को सहस्त्रधारा तीर्थ कहते हैं। इसी जगह श्रीरामचन्द्र जी की आज्ञा से महापराक्रमी लक्ष्मण जी ने अपने योगबल से प्राणों का विसर्जन करके शेषरूप धारण किया था। यहाँ पर सद्बुद्धि से स्नान दान शेषरूपी लक्ष्मण जी का दर्शन पूजन करने वाले मनुष्य को विष्णुलोक में स्थान प्राप्त होता है। उसको नागदंश का भय नहीं होता।

।। श्रीगुप्तहरि।।

तीर्थे तु पश्चिमेभागे गोप्रतारेराभिथं महत् । विष्णुस्थानं च तत्रैव नाम्ना गुप्तहरिः स्मृतः ।। 1।।
यस्मिन् रामाज्ञया देवी साकेतनरौजनाः । जगाम स्वर्गमतुलं निमज्य परमात्मसि ।। 2।।
गोप्रतारे नरो देवी यः स्नाति च सुनिश्चितः । सर्वपापविशुद्धात्मा विष्णुलोके महीयते ।। 3।।

श्री अयोध्या जी से पश्चिम भाग में गुप्तहरि गुप्तार घाट नाम का तीर्थ है। यह विष्णु का स्थान है। यहीं पर श्रीराम जी की आज्ञा से अयोध्या निवासी श्री सरयूजल में निमग्न हो गए थे। यहाँ पर स्नान, दर्शन इत्यादि द्वारा सब पाप नष्ट हो जाते हैं और अन्त में विष्णु लोक प्राप्त होता है।

।। श्री निर्मलीकुण्ड ।।

ततः पश्चिमदिग्भागे निर्मलीकुण्डमुत्तमम् । यत्र वै तीर्थराजोऽपि स्नातुमायाति नित्यशः ।। 1।।
अन्यानि यानि पापानि ब्रह्महत्या समानिच । तानि सर्वाणि नश्यन्ति निर्मलीकुण्डमज्जनात ।। 2।।

अयोध्या के पश्चिम दिशा में निर्मलीकुण्ड नाम का तीर्थ श्री सरयूजल में है। यहाँ पर तीर्थराज प्रयाग नित्य प्रति स्नान करने को आते हैं।

।। अयोध्या महात्म्य।।

।। श्रीमनोरमा तीर्थ ।।

मखस्थानं महापुण्य यत्र पुण्या मनोरमा । यत्र राजा दशरथो पुत्रेष्टि कृतवान् पुरा ।। 1।।
तेन पुण्यप्रभावेण जाता रामादयः सुताः । चैत्रस्य पूर्णिमायां तु यात्रा सांवत्सरी स्मृताः ।। 2।।

यह स्थान श्रीसरयू जी के दूसरे किनारे पर स्थित है। यहाँ पर मनोरमा नदी तथा सरयू संगम है और श्रीराम जी का मन्दिर भी है। यहीं पर राजा दशरथ जी ने पुत्रकामेष्टि यज्ञ किया था

।। बिल्वहरि ।।

तस्मात् पूर्वदिशाभागे नाम्ना विल्वहरिः स्मृतः। तत्र स्नात्वा नरो देवी मुच्यते च ऋणत्रयात् ।। 1।।
शत्रुतो न भयं तस्य विल्वतीर्थस्य दर्शनात्। आमायां माधवेमासि यात्रा सांवत्सरी भवेत् ।। 2।।

अयोध्या के पूर्व भाग में 16 किलोमीटर पर सरयू नदी के किनारे बिल्वहरि जी का स्थान है। यहाँ पर स्नान, दान करने से ऋण त्रय से मुक्ति होती है और दर्शन करने से शत्रु का भय नहींरहता।

।। नंदीग्राम एवं भरतकुण्ड ।।

अयोध्या दक्षिणेभागे नंदिग्रामो बरानने। नंदिग्रामे वसत्पूर्व भरतोरघुवंशजः ।। 1।।
रामचन्द्रं हृदियायनिर्मलात्मा जितेन्द्रियः। तत्र स्नानं तथा श्राद्धं सर्वमक्षयतां ब्रजेत् ।। 2।।
मन्वन्तरसहस्रैस्तु काशीवासेन यत्फलं। तत्फलम् समवाप्नोप्ति नंदिग्रामस्य दर्शनात् ।। 3।।

यह स्थान अयोध्या से दक्षिण दिशा में 18 किलोमीटर की दूरी पर है। यहीं पर श्री भरत जी ने श्रीरामचरण पादुका की स्थापना की थी और चौदह वर्ष निराहार रहे थे। जब रावण को मारकर श्रीरामचन्द्र जी श्रीजानकी एवं लक्ष्मण जी सहित समस्त लोगों के साथ अयोध्या लौटे तब सर्वप्रथम भरत जी की भेंट हुई थी।

।। अयोध्या महात्म्य।।

।। श्रीवशिष्ठ कुण्ड ।।

जन्मस्थानात्पश्चिमे तु कुण्डं पापप्रणाशनम् । वसिष्ठस्य निवसास्तु सारुन्धत्त्याक्ष पार्वती ।। 1।।
सर्वकामफलप्राप्तिर्जायते नात्र संशय । भाद्रे मासे सिते पक्षे यात्रा सांवत्सरी भवेत् ।। 2।।

जन्मस्थान के पश्चिम दिशा में वशिष्ठ कुण्ड नाम का एक कुण्ड है। यहाँ पर अरुन्धती सहित श्रीवशिष्ठ जी का निवास स्थान है।

।। श्री पुण्यहरि ।।

तस्मात् पुण्यहरिर्नाम पुण्यतीर्थ सरोग्रतः । तस्मिन्कुण्डेनरःस्नात्वा सर्वान्कामानवाप्नुयात् ।। 1।।
रविवारे विशेषेणं यात्रा तस्य विधीयते । स्नात्वा दत्वा च विधिवत् पांडुरोगादि नश्यति ।। 2।।

यह तीर्थ विल्वहरि जी के समीप पश्चिम दिशा में एक किलोमीटर पर है। इसको पुण्यहरि कहते हैं। यहाँ पर स्नान दान करने से पाण्डुरोगी रोगमुक्त हो जाते हैं।

।। मणिपर्वत ।।

विद्याकुण्डात्पश्चिमे च पर्वतो राजते प्रिये । जानक्याश्च विहाराय रामचन्द्रस्य चाज्ञया ।। 1।।
गरुड़ेन समानीतः पर्वतो मणिसंज्ञकः । तस्य दर्शनमात्रेण करस्थात्सर्वसिद्धयः ।। 2।।

विद्याकुण्ड से पश्चिम मणिपर्वत नाम का पर्वत है। यह पर्वत श्रीजानकी जी के विहार के लिए, रामचन्द्र जी की आज्ञा से गरुड़ जी ले आए थे। इस पर्वत के दर्शन से ही सम्पूर्ण सिद्धियों की प्राप्ति होती है।

।। श्री विद्याकुण्ड ।।

जन्मस्थानात्पूर्वभागे विघाकुण्डस्य चोत्तमम् । वशिष्ठाद्रामचन्द्रस्य विद्या प्राप्ताश्तुर्दशाः ।। 1।।
सौराशैवाश्च गाणेशा वैष्णवाः शक्तिकास्तथा। सिद्धा भवन्ति मंत्राश्च जपास्तत्रैव पार्वती ।। 2।।

जन्मस्थान के पूर्व दिशा में विद्याकुण्ड स्थान है। यहाँ पर श्री गुरु वशिष्ठ जी ने रामचन्द्र जी को चतुर्दश विद्याएं तथा चौसठ कलाएं पढ़ाई थी। यहाँ सौर, शैव, गणेश, वैष्णव, शाक्त सभी मंत्रों का जप करने से सिद्धि प्राप्त होती है।

अयोध्या में श्रीराम का जन्म एवं उनकी जन्मभूमि

पुराणों, धर्मशास्त्रों के वर्णन एवं हिन्दू समाज में हजारों पीढ़ियों से चले आ रहे विश्वास के अनुसार श्रीहरि विष्णु ने ही कौशल नरेश अयोध्यापति दशरथ के यहाँ मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के रूप में अवतार ब्रह्मादि देवों से प्राप्त वर के कारण उदण्ड रावण को पराभूत करने के लिए लिया।

एवं दत्वा वरं देवो देवानां विष्णुरात्मवान। मानुष्ये चिन्तयामास जन्मभूमिमथात्मनः।।30।। (वा.रा., बा.कां. पंचदश सर्ग)
देवताओं को वर देकर मनस्वी भगवान विष्णु ने मनुष्य लोक में पहले अपनी जन्मभूमि के सम्बन्ध में विचार किया।
ततः पद्मपलाशाक्षः कृत्वाऽऽत्मानं चतुर्विधम्। पितरं रोचयामास तदा दशरथं नृपम्।।31।। (वा.रा., बा.कां. पंचदश सर्ग)
इत्येतद् वचनं श्रुत्वा सुराणां विष्णुरात्भवान। पितरं रोचयामास तदा दशरथं नृपम्।।8।। (वा.रा., बा.कां. षोड्श सर्ग)

देवताओं की बातों को सुनकर - समस्त जीवात्माओं को वश में रखने वाले भगवान विष्णु ने अवतार काल में राजा दशरथ को ही पिता बनाने की इच्छा की और देवताओं को अभय दिया। दशरथ को ही पिता बनाने का भगवान ने क्यों निश्चय किया? इसका वर्णन गोस्वामी तुलसीदास जी ने रामचरितमानस में किया है -

अंसन सहित मनुज अवतारा - लैहों दिनकर बंस उदारा ।
कश्यप अदिति महातप कीन्हाँ - तिन्हकहुँ मैं पूरब वर दीन्हाँ ।
ते दशरथ कौसल्या रुपा - कौशलपुरी प्रकट नर भूपा ।
अवधपुरी रघुकुल मनिराऊ - वेद विदित तेहि दशरथ नाऊ ।। रा. च.म. बा. का.

इस प्रकार सम्पूर्ण मानवता के कल्याण एवं धर्म संस्थापन हेतु श्रीहरि विष्णु अयोध्या में महाराज दशरथ के यहाँ महारानी कौशल्या के गर्भ से प्रकट हुए।

भगवान के जन्म के समय का वर्णन - राम चरित मानस के अनुसार

सुख जुत कछुक काल चलि गयऊ - जेहि प्रभु प्रकट सो अवसर भयऊ।
जोग, लगन, ग्रह, बार, तिथि, सकल भए अनुकूल।
दो0 : चर, अरू, अचर हर्षजुत रामजनम सुख मूल।। 190।। रा.च.मा. बा. कां.
नौमी तिथि, मधुमास पुनीता - सुकुल पच्छ अभिजित हरि प्रीता।
मध्य दिवस अति शीत न धामा - पावन काललोक विश्रामा ।।190/1,2।। रा.च.मा. बा.कां.
वाल्मीकि रामायण के अनुसार -
ततो यज्ञे समाप्ते तु ऋतू नां षट् समत्ययुः। ततश्च द्वादश मासे चैत्रे नावमिके तिथौ ।।8।।
नक्षत्रेऽदितिदैवत्ये स्वोच्च संस्थेषु पंचसु। ग्रहेषु कर्कटे लग्नेवाक्पताविन्दुना सह ।।9।।
प्रोद्यमाने जगन्नाथं सर्वलोकं नमस्कृतम्।
कौसल्या जनप्रद् रामं दिव्य लक्षण संयुतम् ।।10।। वा.रा. बा.कां. अष्टादश सर्ग

यज्ञ समाप्त के पश्चात जब छः ऋतुएं बीत गईं तब बारहवें मास में चैत्र के शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि को पुनर्वसु नक्षत्र एवं कर्क लग्न में कौसल्या देवी ने दिव्य लक्षणों से युक्त सर्वलोकवन्दित जगदीश्वर श्रीराम को जन्म दिया। उस समय (सूर्य, मंगल, शनि, गुरु और शुक्र) पांच ग्रह अपने - अपने उच्च स्थान में विद्यमान थे तथा लग्न में चन्द्रमा के साथ वृहस्पति विराजमान थे।

अध्यात्म रामायण के अनुसार

उपभुज्य चरुं सर्वाः स्त्रियो गर्भसमन्विता । देवता इव रेजुस्ताः स्वभाषा राजमंदिरे ।।
दशमे मासि कौसल्या सुषुवे पुत्रमद्भुतम् । मधुमासे सिते पक्षे नवम्यां कर्कटे शुभे ।।
पुनर्वस्वृक्ष सहिते उच्चस्थे ग्रहपंचके । मेषे पूषणि संप्राप्ते पुष्पवृष्टि समाकुले ।। अध्यात्म रामायण

जन्म के समय राम के स्वरूप का वर्णन

विष्णोरर्धं महाभागं पुत्रमैक्ष्वाकुनन्दनम् । लोहिताक्षं महाबाहुं रक्तोष्ठं दुन्दुभिस्वनम् ।। 11 ।।

वे विष्णुरूप कौसल्या के महाभाग पुत्र श्रीराम इक्ष्वाकु कुल का आनन्द बढ़ाने वाले थे। उनके नेत्र लालिमायुक्त, ओंठ लाल, आजानुबाहु और स्वर दुन्दुभि के शब्द के समान गम्भीर था।

कौसल्या शुशुभे तेन पुत्रेणामित तेजसा । यथावरेण देवानामदिति र्वज्रपाणिना ।। 12 ।।

उस अमित तेजस्वी पुत्र से महारानी कौसल्या की बड़ी शोभा हुई। ठीक उसी तरह जैसे सुरश्रेष्ठ वज्रपाणि इन्द्र से देवमाता अदिति सुशोभित हुई थी।

उत्स्वश्च महानासीदयोध्यायां जनाकुलः ।

अर्थात् अयोध्या में भगवान के जन्म के पश्चात बड़ा उत्सव हुआ। अतः अयोध्या में ही भगवान ने जन्म लिया - स्कन्द पुराण, वृहदधर्म पुराण, अग्निपुराण, गरुणपुराण, हरिवंशपुराण, मत्स्यपुराण, रघुवंश आदि ग्रन्थों में श्रीराम, श्रीराम जन्मस्थान, अयोध्या, रामायण एवं आदिकवि श्री वाल्मीकि का उल्लेख मिलता है।

प्रभु राम के शब्दों में जन्मभूमि

जब प्रभु श्रीराम रावण का संहार कर अयोध्या लौटते हैं तो अपने श्रीमुख से सुग्रीव, अंगद आदि वानर जूथपों को अपनी जन्भूमि अयोध्या की महिमा बताते हुए कहते हैं कि ''यद्धपि सम्पूर्ण जगत बैकुण्ठ का ही बखान करता है किन्तु मुझे अवधपुरी के समान प्रिय कुछ भी नहीं है जहां मेरी जन्मभूमि है जिसके उत्तर में सरयू नदी बहती है, जिसमें स्नानकर बिना किसी प्रयास के लोग मेरे पास वास करते हैं यहां के लोग मुझे अत्यन्त प्रिय हैं। प्रभु श्रीराम के इन शब्दों को सुनकर सभी वानर हर्ष से इसलिए ओत-प्रोत हो जाते हैं कि प्रभु ने अपने श्रीमुख से अवध की महिमा उनको बताई।

सुनु कपीस ! अंगद ! लंकेशा। पावनपुरी रुचिर यह देसा ।।
जद्यपि सब बैकुण्ठ बखाना। वेद पुरान विदित जगुजाना ।।
अवधपुरी सम प्रिय नहिं सोऊ। यह प्रसंग जानई कोऊ-कोऊ।।
जन्मभूमि मम पुरी सुहावनि। उत्तरदिशि बहि सरजू पावनि ।।
जा मज्जन ते बिनहि प्रयासा। मम समीप नर पावहिं बासा।।
अतिप्रिय मोहि यहाँ के बासी। मम धामदा पुरी सुख रासी ।।
हरसे सब कपि सुनि प्रभु बानी। धन्य अवध जो राम बखानी।। रा.च.म.(उ.का.)

इन आख्यानों से सिद्ध होता है कि भगवान श्रीहरि विष्णु ने धर्म संस्थापन के लिए अयोध्या में महाराज दशरथ के यहाँ राम के रूप में अवतार लिया।

स्कन्दपुराण (वैष्णवखण्ड – अयोध्या माहात्म्य) में राम जन्मभूमि

(संपादक : श्री कृष्णदास खेम राज शास्त्री-1910)

एततपश्चिमदिग्भागे वर्तते परमो मुने, पिंडारक् इति ख्यातो वीरः परमपौरूषः।।
पूजनीयः प्रयत्नेन गंधपुष्पाक्षतादिभिः।। 13।।
यस्य पूजावशान् नृणां सिद्धयः करसंश्रिताः। तस्य पूजाविधानेन कर्तव्यं पूजनं नरैः।। 14।।
सरयूसलिले स्नात्वा पिण्डारकच पूजयेत्। पापिनां मोहकर्तारं मतिदं कृतिनां सदा।। 15।।
तस्य यात्र विधातव्या सुपुण्या नवरात्रिषु। तत्पश्चिमदिशाभागे विघ्नेशं किल पूजयेत्।। 16।।
यस्य दर्शनतो नृणां विघ्नक्लेशो न जायते। तस्माद् विघ्नेश्वरः पूज्यः सर्वकामफलप्रदः।। 17।।
तस्मात् स्थानत ऐशाने रामजन्म प्रवर्तते। जन्मस्थानमिदं प्रोक्तं मोक्षादिफलसाधनम्।। 18।।
विघ्नेश्वरात्पूर्वभागे वासिष्ठादुत्तरे तथा। लौमशात्यश्चिमे भागे जन्मस्थानं ततःस्मृतम्।। 19।।
यद् दृष्ट्वा च मनुष्यस्य गर्भवासजयो भवेत्। विना दानेन तपसा विना तीर्थोर्विना मखैः।।20।।
नवमी दिवसे प्राप्ते व्रतधारी ही मानवः। स्नानदानप्रभावेण मुच्यते जन्मबन्धनात्।। 21।।
कपिलागोसहस्त्रणि यो ददाति दिने दिने। तत्फलं समवाप्नोति जन्मभूमेः प्रदर्शनात्।। 22।।
आश्रमे वसतां पुंसां तापसानाच यत्फलम्। राजसूयसहस्राणि प्रतिवर्षाणि होत्रतः।। 23।।
नियमस्थं नरं दृष्ट्वा जन्मस्थाने विशेषतः। मातापित्रेर्गुरूणांच भक्तिमुद्वहतां सताम्।। 24।।
तत्फलं समवाप्नोति जन्मभूमेः प्रदर्शनात्।।

।। जन्मस्थान एवं दर्शन का महत्व।।

जन्मस्थानं नरः प्राप्य कुर्याद्रामस्य पूजनम् । सौवर्णे राजंत वापि कारयेद्रघुनंदनम् ।। 1।।
मातुरंकेशवं राममिन्द्रनीलमणि-प्रभम् । कोमलागं विशालाक्षं विघुद्वर्णाम्बरावृतम ।। 2।।
इति ध्यात्वा रमानाथं मंत्रेणानेन पूजयेत् । श्रीरामाय नमोष मंत्रः सवार्थसाधकंः ।। 3।।
कपिला गोसहस्रांच यो ददाति दिने दिने । तत्फलम् समवाप्नोति जन्मभूमेः प्रदर्शनात् ।। 4।/

श्रीरामचन्द्र जी की जन्मभूमि में जाकर सोने की अथवा चांदी की प्रतिमा बनाकर स्थापित करें और फल पुष्प दक्षिणा हाथ में लेकर उनका इस प्रकार ध्यान करें - ‘‘माता कौशल्या जी की गोद में इन्द्र नीलमणि के समान कांति जिनकी है, जिनका शरीर कोमल तथा विशाल है, जिनके नेत्र बिजली के समान चमकने वाले हैं, जो वस्त्र-आभूषण पहिने हैं, ऐसे श्रीरामचन्द्र भगवान को हमारा बारम्बार नमस्कार है। ‘ऐसा कहकर वह पुष्पांजलि समर्पण करें।’ ‘ऊँ श्रीरामाया नमः’ यह मंत्र पढ़ने से मनुष्यों के सब मनोरथ सिद्ध होते हैं। नित्यप्रति एक हजार कपिला गाय दान करने से जो पुण्य होता है वही श्रीराम जन्मभूमि के दर्शन मात्र से प्राप्त होता है तथा जन्म-जन्मान्तर के सहस्त्र जन्मों के पाप दर्शन मात्र से ही नष्ट हो जाते हैं। पुत्रार्थियों को पुत्र की प्राप्ति होती है, धनार्थियों को धन-लाभ होता है और मोक्षार्थियों को मोक्ष की प्राप्ति होती है। केवल जन्मभूमि के दर्शन मात्र से ही मनुष्यों का गर्भवास क्षय हो जाता है।

युगानुसार इक्ष्वाकु वंश के राजा

सतयुग

मरीचि-कश्यप-विवस्वान-वैवस्वत मनु (सृष्टि के प्रथम प्रजापति इनके 10 पुत्र हुए) इक्ष्वाकु (ज्येष्ठ पुत्र से सूर्यवंश का प्रारम्भ माना गया) - विकुक्षि (शशाद) - कुकुत्स्थ (आर्डिनक, इन्द्रवाह, पुरंजय) - अनेनस (अनरण्य) - पृथु रोमन - त्रिशंकु - विश्वगाश्च (विश्वरन्ध्रि) - आर्द्र (चन्द्र, इन्दु, आन्ध्र) - युवनाश्व, प्रथम - श्रावस्त (श्राव) - वृहदश्व - कुवलयाश्व - दृढ़ाश्व - प्रमोद - हर्याश्व प्रथम - निकुंभ - संहताश्व - कृशाश्व - प्रसेनजित् युवनाश्व द्वितीय - मान्धाता (मांधातृ) - पुरुकुत्स - मुचुकुंद - त्रृसदस्यु संभूत - अनरण्य - वृषदश्व - हर्षश्व द्वितीय - वसमनस (वसुमत) - तृधन्वन (त्रिधन्वम्) - त्रैयारूण - त्रिशंक (सत्यव्रत) - हरिश्चन्द्र - रोहित - हरित - चंचु (चंप भागवत के अनुसार) विजय-रूरूक - वृक - बाहु।

त्रेतायुग -

सगर- असमंजस-अंशुमान-दिलीप प्रथम-भगीरथ-श्रुत-नाभाग यानभ-अंबरीष-सिंन्धुदीप- आयुतायुष- ऋतुपर्ण- सर्वकाम-सुदास-कल्माषपाद-अष्मक-मूलक-शतरथ-बुद्धशर्मन- विश्वसह प्रथम-दिलीप

द्वापरयुग -

कुश-अतिथि-निषध-नल-नषभ-पुण्डरीक-क्षेमधन्वन-देवानीक-अहिनगु-परिपात्र-दलं-शलं- वज्रनाभ- शंखन-व्यष्तिाश्व-विश्वसह द्वितीय- हिरण्यनाभ- पुष्य- ध्रुव-ध्रुवसन्धि-सुदर्शन-अग्निवर्ण-शीघ्र-मरू-प्रथुश्रुत-सुसंधि-अमर्ष-महाश्वत-वृहदल (अभिमन्यु ने इसे युद्ध में मारा था) महाभारत के पश्चात

कलियुग -

सूर्यवंशी राजा- बृहतक्षय-उरूक्षम-वत्सद्रोह(वत्सव्यूह), प्रतिव्योम-दिवाकर-सहदेव-ध्रुवश्व (वृहदाश्व)-भनुरथ-प्रतीताश्व (प्रतिपाश्व)-सुप्रती-मरूदेव(सहदेव)-सुनक्षत्र-विन्नराश्व-(पुष्कर)-अंतरिक्ष-सुषेण (सुपर्ण, सुवर्ण,सुतयस)-सुमित्र(अभित्रजित) ब्रहद्वज(भ्राज, भारद्वाज)-धर्म (वीर्यवान)- कृतंत्र्य-व्रात-रणंजय-संजय-शाक्य-क्रुद्धोधन(शुद्धोधन) सिद्धार्थ-राहुल (रातुल, बाहुलं, लागल, पुष्कल)-प्रसेनजित(सेनजित्), क्षुद्रक (क्षुलिक, कुंदक, कुंदव, रणक)-सुरथ-सुमित्र।